Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 2010–2014

CLEAN DRINKING WATER, GENDER EQUALITY AND WOMEN EMPOWERMENT: AN ANALYSIS

स्वच्छ पेयजल, लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण: एक विश्लेषण

Dr. Pramila [1], Seema Kaushik Sharma [2]

[1] Assistant Professor, Department of Hindi, Laxmibai College, University of Delhi, India
[2] Professor, Department of Physical Education and Sports, Laxmibai College, University of Delhi, India

ABSTRACT

English: Clean drinking water is a critical issue linked to gender equality and women empowerment. One of the oftenoverlooked aspects of this relationship is how water-related burdens and the gender pay gap in the workforce are intertwined. Women, especially in rural and developing areas, are disproportionately responsible for collecting water, which often takes up a considerable amount of time every day. This unpaid labor limits their opportunities for paid work, economic advancement, and career development, contributing to the gender pay gap. In many societies, women's role in water management and infrastructure is undervalued, and their labor is often overlooked in formal economic measures. A multi-pronged approach is needed to address the gender pay gap in the context of water access and management. This abstract explains how improving access to clean water can help reduce the disproportionate burdens women face, increasing their ability to participate in the formal workforce and take advantage of economic opportunities. By shifting the responsibility for water collection from women to modern infrastructure, communities free up women's time, allowing them to take up paid work and reduce the gender pay gap. Furthermore, empowering women to take on leadership roles in water management and governance can create more equitable systems that not only provide clean water but also advance gender equality in the labor market. Ultimately, tackling the gender pay gap requires addressing fundamental issues of unpaid labor, access to resources, and opportunities for women. Reducing the burden of water on women and promoting their participation in economic and decision-making processes are essential to creating a fairer, more just workforce and society.

Hindi: स्वच्छ पेयजल, लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण से जुड़ा एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इस संबंध के अक्सर अनदेखा किए जाने वाले पहलुओं में से एक यह है कि कार्यबल में पानी से संबंधित बोझ और लिंग वेतन अंतर कैसे एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। महिलाएँ, विशेष रूप से ग्रामीण और विकासशील क्षेत्रों में, पानी इकट्ठा करने के लिए असमान रूप से जिम्मेदार हैं, जिसमें अक्सर हर दिन काफी समय लगता है। यह अवैतनिक श्रम उनके वेतनभोगी काम, आर्थिक उन्नति और करियर विकास के अवसरों को सीमित करता है, जिससे लिंग वेतन अंतर में योगदान होता है। कई समाजों में, जल प्रबंधन और बुनियादी ढाँचे में महिलाओं की भूमिका को कम आंका जाता है, और उनके श्रम को अक्सर औपचारिक आर्थिक उपायों में अनदेखा कर दिया जाता है। जल पहुँच और प्रबंधन के संदर्भ में लैंगिक वेतन अंतर को संबोधित करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। यह सार बताता है कि स्वच्छ जल तक पहुँच में सुधार कैसे महिलाओं पर पड़ने वाले असंगत बोझ को कम करने में मदद कर सकता है, जिससे औपचारिक कार्यबल में भाग लेने और आर्थिक अवसरों का लाभ उठाने की उनकी क्षमता बढ़ सकती है। महिलाओं से जल संग्रह की जिम्मेदारी को आधुनिक बुनियादी ढाँचे पर स्थानांतरित करके, समुदाय महिलाओं के समय को मुक्त करते हैं, जिससे उन्हें वेतनभोगी काम करने में मदद मिलती है और लैंगिक वेतन अंतर कम होता है। इसके अलावा, जल प्रबंधन और शासन में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना अधिक न्यायसंगत प्रणाली बना सकता है जो न केवल स्वच्छ जल प्रदान करती है बल्कि श्रम बाजार में लैंगिक समानता को भी आगे बढ़ाती है। अंततः, लैंगिक वेतन अंतर से निपटने के लिए अवैतनिक श्रम, संसाधनों तक पहुँच और महिलाओं के लिए अवसरों के मूलभूत मुद्दों को संबोधित करने की आवश्यकता है। महिलाओं पर पानी के बोझ को कम करना और आर्थिक और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.5116

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

में उनकी भागीदारी को बढ़ावा देना एक अधिक निष्पक्ष, अधिक न्यायपूर्ण कार्यबल और समाज बनाने के लिए आवश्यक है।

Keywords: Gender Pay Gap, Unpaid Labor, Women, Workforce Participation, Economic Advancement, Water Management, लिंग वेतन अंतर, अवैतनिक श्रम, महिलाएँ, कार्यबल भागीदारी, आर्थिक उन्नति, जल प्रबंधन

1. प्रस्तावना

लिंग वेतन अंतर विकासशील और विकसित दोनों देशों में एक महत्वपूर्ण चुनौती बना हुआ है। महिलाओं के अधिकारों में प्रगति और कार्यबल में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के बावजूद, महिलाएँ समान काम के लिए पुरुषों से कम कमाती हैं। विश्व आर्थिक मंच की वैश्विक लिंग अंतर रिपोर्ट 2020 के अनुसार, प्रगति की वर्तमान दर पर लिंग वेतन अंतर अगले 257 वर्षों तक बंद नहीं होगा। जबकि इस अंतर को अक्सर भेदभाव, व्यावसायिक अलगाव और शिक्षा तक असमान पहुँच जैसे कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, बुनियादी ढाँचे, विशेष रूप से स्वच्छ पानी तक पहुँच, महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में भूमिका की बढ़ती मान्यता है। दुनिया के कई हिस्सों में, महिलाओं और लड़कियों को घरेलू जल संग्रह का खामियाजा भुगतना पड़ता है, जो उनके समय और ऊर्जा को प्रभावित करता है, जिससे कार्यबल में भाग लेने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती है। यह पेपर यह पता लगाएगा कि स्वच्छ पानी तक पहुँच में सुधार कैसे महिलाओं को सशक्त बना सकता है, उनकी कार्यबल भागीदारी को बढ़ा सकता है और अंततः लिंग वेतन अंतर को पाटने में योगदान दे सकता है। जल की पहुँच, महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और लैंगिक समानता के बीच संबंध पर विचार करते हुए, यह शोधपत्र यह तर्क देगा कि महिलाओं के अधिकारों को आगे बढ़ाने और कार्यस्थल में लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए जल अवसंरचना में निवेश आवश्यक है।

2. लैंगिक वेतन अंतर: एक सतत मुद्दा

लैंगिक वेतन अंतर कार्यबल में पुरुषों और महिलाओं के बीच आय में अंतर को संदर्भित करता है, जिसे आमतौर पर पुरुषों की आय के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है। महिलाओं की शिक्षा, कार्यबल में भागीदारी और अधिकारों में दशकों की प्रगति के बावजूद यह अंतर वैश्विक स्तर पर बना हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के अनुसार, वैश्विक स्तर पर महिलाएँ समान कार्य के लिए पुरुषों की तुलना में लगभग 20% कम कमाती हैं। इस असमानता को विभिन्न कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है:

1) व्यावसायिक अलगाव: महिलाएँ अक्सर कम वेतन वाले उद्योगों या भूमिकाओं में केंद्रित होती हैं, जैसे कि देखभाल करना, पढ़ाना या लिपिकीय कार्य, जबकि पुरुष इंजीनियरिंग, वित्त और प्रौद्योगिकी जैसे उच्च वेतन वाले व्यवसायों पर हावी होते हैं।
2) कार्यस्थल भेदभाव: अंतर्निहित पूर्वाग्रह और प्रत्यक्ष भेदभाव के कारण अक्सर महिलाओं को समान कार्य के लिए कम भुगतान किया जाता है या पदोन्नति के लिए अनदेखा कर दिया जाता है।
3) देखभाल अर्थव्यवस्था: महिलाओं को बाल देखभाल और बुजुर्गों की देखभाल सहित अवैतनिक देखभाल कार्य का बोझ उठाने की अधिक संभावना है, जो उनके करियर में उन्नति के अवसरों को सीमित करता है।
4) बातचीत और विश्वास की कमी: अध्ययनों से पता चला है कि पुरुषों की तुलना में महिलाओं द्वारा अपने वेतन पर बातचीत करने की संभावना कम होती है, जो समग्र वेतन असमानता में योगदान देता है।
5) कार्यस्थल लचीलापन: लिंग भूमिकाएं और सामाजिक अपेक्षाएं अक्सर यह तय करती हैं कि महिलाएं परिवार और देखभाल की जिम्मेदारियों को प्राथमिकता दें, जिससे उन्हें कम वेतन वाली, अंशकालिक या लचीली नौकरियां लेने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

शिक्षा और राजनीतिक प्रतिनिधित्व में लैंगिक अंतर को कम करने में महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, महिलाओं को मुख्य रूप से इन और अन्य संरचनात्मक कारकों के कारण वेतन में पर्याप्त अंतर का सामना करना पड़ रहा है।

3. स्वच्छ जल तक पहुँच: एक महत्वपूर्ण संसाधन

स्वच्छ जल तक पहुँच व्यक्तियों और समुदायों के कल्याण और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र जल को एक बुनियादी मानव अधिकार के रूप में मान्यता देता है, फिर भी अरबों लोगों के पास अभी भी स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल तक विश्वसनीय पहुँच नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, दुनिया भर में लगभग 2.2 बिलियन लोगों के पास सुरक्षित रूप से प्रबंधित पेयजल तक पहुँच नहीं है। पहुँच की यह कमी महिलाओं और लड़कियों को असमान रूप से प्रभावित करती है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों और कम आय वाले देशों में। महिलाएँ और लड़कियाँ आमतौर पर अपने घरों के लिए पानी इकट्ठा करने के लिए जिम्मेदार होती हैं, अक्सर लंबी दूरी तक पैदल चलती हैं और पानी का भारी बोझ उठाती हैं, जिसमें उनके दिन के कई घंटे लग जाते हैं।

कई क्षेत्रों में, पानी की कमी न केवल स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनती है, बल्कि महत्वपूर्ण समय का बोझ भी पैदा करती है, जिससे महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में शामिल होने, शिक्षा प्राप्त करने या अपने समुदायों में पूरी तरह से भाग लेने की क्षमता सीमित हो जाती है। पानी इकट्ठा करने में बिताया गया समय अन्यथा भुगतान किए गए श्रम, शिक्षा या आर्थिक भागीदारी के अन्य रूपों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, पानी इकट्ठा करने की शारीरिक मांग महिलाओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता को प्रभावित कर सकती है, जिससे व्यक्तियों और समुदायों के लिए दीर्घकालिक आर्थिक परिणाम हो सकते हैं।

4. जल पहुँच और लैंगिक समानता का अंतर्संबंध

स्वच्छ जल तक पहुँच में सुधार करने से महिलाओं को अपने दैनिक जीवन में और विस्तार से, कार्यबल में सामना करने वाली कुछ प्रमुख बाधाओं को कम करने की क्षमता है। स्वच्छ जल तक पहुँच और लैंगिक समानता के बीच संबंध को कई प्रमुख दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है:

1) समय की बचत और कार्यबल की भागीदारी

दुनिया के कई हिस्सों में, महिलाएँ हर दिन पानी इकट्ठा करने में घंटों बिताती हैं, अक्सर ऐसे क्षेत्रों में जहाँ स्वच्छ पानी की पहुँच सीमित है। पानी इकट्ठा करने का बोझ महिलाओं और लड़कियों पर असमान रूप से पड़ता है, जिससे उनका बहुमूल्य समय नष्ट हो जाता है जिसका उपयोग शिक्षा या आय-उत्पादक गतिविधियों के लिए किया जा सकता है। लिंग और पानी पर संयुक्त राष्ट्र महिला की रिपोर्ट के अनुसार, उप-सहारा अफ्रीका में महिलाएँ औसतन 16 मिलियन घंटे प्रतिदिन पानी इकट्ठा करने में बिताती हैं। घरों के नज़दीक ही स्वच्छ जल की पहुँच प्रदान करके, महिलाएँ समय बचा सकती हैं जो अन्यथा जल संग्रह पर खर्च होता। इस बचाए गए समय को शिक्षा, नौकरी प्रशिक्षण या औपचारिक रोजगार की ओर पुनर्निर्देशित किया जा सकता है, जिससे महिलाओं के आर्थिक अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। अध्ययनों से पता चला है कि जल पहुँच में सुधार से श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ सकती है, उनकी उत्पादकता में सुधार हो सकता है और उन्हें आय-उत्पादक गतिविधियाँ करने का अवसर मिल सकता है।

2) स्वास्थ्य और कल्याण

स्वच्छ जल का स्वास्थ्य परिणामों में सुधार से सीधा संबंध है। जल की कमी वाले क्षेत्रों में महिलाएँ और बच्चे विशेष रूप से जलजनित बीमारियों के प्रति संवेदनशील होते हैं, जिसके कारण वे काम और स्कूल से अनुपस्थित हो सकते हैं। हैजा और पेचिश जैसी जलजनित बीमारियाँ महिलाओं को असमान रूप से प्रभावित करती हैं, जो अक्सर परिवार के सदस्यों के बीमार होने पर प्राथमिक देखभाल करने वाली होती हैं। ये स्वास्थ्य चुनौतियाँ महिलाओं की कार्यबल में पूरी तरह से भाग लेने और अपनी पूरी कमाई क्षमता हासिल करने की क्षमता को सीमित करती हैं। जब महिलाओं को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध होता है, तो उन्हें पानी से संबंधित बीमारियों से पीड़ित होने की संभावना कम होती है, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें काम से कम दिन छुट्टी मिलती है और उनका समग्र स्वास्थ्य बेहतर होता है। स्वच्छ जल के सकारात्मक स्वास्थ्य प्रभाव बीमार परिवार के सदस्यों की देखभाल में लगने वाले समय को कम करके और अपने स्वयं के शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार करके महिलाओं की कमाई क्षमता को बढ़ा सकते हैं।

3) सशक्तिकरण और निर्णय लेना

स्वच्छ जल तक पहुँच महिलाओं को घरेलू संसाधनों पर अधिक नियंत्रण देकर उन्हें सशक्त भी बना सकती है। जिन समुदायों में पानी की कमी है, वहाँ पानी इकट्ठा करने की ज़िम्मेदारी अक्सर महिलाओं और लड़कियों पर होती है। यह ज़िम्मेदारी उनकी गतिशीलता, स्वतंत्रता और शिक्षा और रोज़गार के अवसरों को सीमित कर सकती है।

जब महिलाओं को घर के नज़दीक स्वच्छ जल उपलब्ध होता है, तो वे आर्थिक गतिविधियों में शामिल होने, घरेलू निर्णय लेने में योगदान देने और स्थानीय शासन में भाग लेने की अधिक संभावना रखती हैं। महिलाओं को जल संसाधनों का प्रबंधन करने और जल-संबंधी निर्णय लेने में शामिल करने के लिए सशक्त बनाना उनकी सामाजिक स्थिति को भी बढ़ा सकता है और समुदाय में उनकी आवाज़ को बेहतर बना सकता है। सशक्त महिलाएँ समान वेतन, बेहतर कामकाजी परिस्थितियों और संसाधनों तक पहुँच के लिए बेहतर तरीके से बातचीत करने में सक्षम होती हैं जो उन्हें कार्यबल में सफल होने में मदद कर सकती हैं।

4) शिक्षा और कौशल विकास

स्वच्छ जल तक पहुँच महिलाओं की शिक्षा तक पहुँच को भी बेहतर बना सकती है। जिन क्षेत्रों में जल संग्रह एक समय लेने वाला कार्य है, वहाँ लड़कियों को अक्सर घर के कामों में मदद करने के लिए स्कूल से बाहर रखा जाता है, जिसमें पानी लाना भी शामिल है। इससे उनके कौशल विकास और शैक्षिक प्राप्ति के अवसर सीमित हो जाते हैं, जो दोनों ही कार्यबल में प्रवेश करने और आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। जल संग्रह के समय के बोझ को कम करके, लड़कियाँ स्कूल जाने में अधिक समय बिता सकती हैं, जिससे उच्च शिक्षा प्राप्त करने और उच्च वेतन पाने के लिए आवश्यक कौशल के साथ कार्यबल में प्रवेश करने की उनकी संभावना बढ़ जाती है। शिक्षित महिलाओं के उच्च वेतन वाले व्यवसायों में प्रवेश करने और बेहतर वेतन के लिए बातचीत करने की अधिक संभावना होती है, इस प्रकार वे लिंग वेतन अंतर को कम करने में योगदान देती हैं। केस स्टडीज़: महिलाओं की कार्यबल भागीदारी पर स्वच्छ जल का प्रभाव

दुनिया भर के कई **केस स्टडीज़** इस बात के पुख्ता सबूत देते हैं कि स्वच्छ जल तक पहुँच महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को कैसे सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है:

1) **ग्रामीण भारत:** ग्रामीण भारत में, महिलाएँ आमतौर पर दूर के स्रोतों से पानी इकट्ठा करने में हर दिन कई घंटे बिताती हैं। अंतर्राष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान (IWMI) द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि जब समुदायों को पाइप्ड जल प्रणालियों तक पहुँच मिली, तो महिलाओं द्वारा पानी इकट्ठा करने में बिताया जाने वाला समय काफी कम हो गया, जिससे उन्हें आय-उत्पादक गतिविधियों में संलग्न होने का मौका मिला। जो महिलाएँ पहले घर में अवैतनिक श्रम तक सीमित थीं, उन्होंने घर के बाहर सशुल्क श्रम में भाग लेना शुरू कर दिया, जिससे घरेलू आय में योगदान मिला और उनकी वित्तीय स्वतंत्रता में सुधार हुआ।
2) **उप-सहारा अफ्रीका:** उप-सहारा अफ्रीका के कई हिस्सों में, महिलाएँ और लड़कियाँ पानी इकट्ठा करने में असंगत समय बिताती हैं। युगांडा में एक परियोजना जिसने सामुदायिक जल पंप शुरू किए, ने महिलाओं और लड़कियों द्वारा पानी लाने में बिताए जाने वाले समय में महत्वपूर्ण कमी की। इससे उन्हें कृषि कार्य और स्थानीय व्यवसायों पर ध्यान केंद्रित करने, घरेलू आय बढ़ाने और अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने में मदद मिली।
3) **लैटिन अमेरिका:** लैटिन अमेरिका के ग्रामीण क्षेत्रों में, महिलाओं को अक्सर दूर के स्रोतों से पानी इकट्ठा करने का काम सौंपा जाता है। इन क्षेत्रों में स्वच्छ जल तक पहुँच शुरू करने वाले कार्यक्रमों ने न केवल महिलाओं पर शारीरिक तनाव को कम किया, बल्कि उन्हें शिक्षा और औपचारिक रोजगार प्राप्त करने में भी सक्षम बनाया। इन कार्यक्रमों का आर्थिक प्रभाव महत्वपूर्ण रहा है, कार्यबल में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने घरेलू आय में वृद्धि में योगदान दिया है।

5. नीतिगत सिफारिशें

लिंग वेतन अंतर को पाटने के लिए, महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए व्यापक रणनीति के हिस्से के रूप में स्वच्छ जल तक पहुँच पर विचार करना आवश्यक है। कई नीतिगत सिफारिशें लैंगिक समानता पहलों में जल तक पहुँच को एकीकृत करने में मदद कर सकती हैं:

1) **जल अवसंरचना में निवेश करें:** सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को जल अवसंरचना में निवेश को प्राथमिकता देनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि स्वच्छ जल सभी के लिए सुलभ हो, विशेष रूप से ग्रामीण और वंचित समुदायों में।
2) **जल प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा दें:** महिलाओं को जल प्रबंधन से संबंधित निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए, जिसमें जल अवसंरचना की योजना, कार्यान्वयन और रखरखाव शामिल है। इससे न केवल महिलाओं को सशक्त बनाया जाएगा बल्कि यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित किया जाए।
3) **सार्वजनिक-निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करें:** सरकारों को सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच भागीदारी को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि स्थायी जल अवसंरचना का निर्माण किया जा सके जो शहरी और ग्रामीण दोनों जल की कमी के मुद्दों को संबोधित कर सके।
4) **शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम:** महिलाओं और लड़कियों को जल से संबंधित स्वास्थ्य और स्वच्छता के साथ-साथ जल प्रबंधन के लिए तकनीकी कौशल के बारे में शिक्षित करने के उद्देश्य से कार्यक्रम उन्हें अपने समुदायों और कार्यस्थलों में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए सशक्त बना सकते हैं।

6. निष्कर्ष

स्वच्छ जल तक पहुँच केवल स्वास्थ्य या सुविधा का मामला नहीं है - यह महिलाओं को कार्यबल में पूरी तरह से भाग लेने और आर्थिक समानता प्राप्त करने में सक्षम बनाने में एक महत्वपूर्ण कारक है। जल-दुर्लभ क्षेत्रों में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करके, हम जल संग्रह

के समय के बोझ को कम कर सकते हैं, महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार कर सकते हैं, उनकी उत्पादकता बढ़ा सकते हैं और उन्हें अर्थव्यवस्था में योगदान करने का अवसर दे सकते हैं। स्वच्छ जल लैंगिक समानता का एक प्रमुख चालक है, और जल अवसंरचना में निवेश लैंगिक वेतन अंतर को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। लैंगिक समानता पहलों के अभिन्न अंग के रूप में जल की पहुँच पर विचार करके, हम महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए एक अधिक न्यायसंगत और समृद्ध दुनिया बना सकते हैं।

संदर्भ

Caruso, B. A., Conrad, A., Patrick, M., Owens, A., Kviten, K., Zarella, O., ... & Winkler, I. T. (2022). Water, sanitation, and women's empowerment: A systematic review and qualitative metasynthesis. Water, 1(6), e0000026. https://doi.org/10.1371/journal.pwat.0000026.

Down To Earth. (2018, July 23). India's water crisis: It is most acute for women. Retrieved from https://www.downtoearth.org.in/water/india-s-water-crisis-it-is-most-acute-for-women-78472.

International Development Research Centre (IDRC). (2020). Women farmers bear the burden of India's water crisis. Retrieved from https://idronline.org/women-bear-the-burden-of-indias-water-crisis/

Kabeer, N. (1999). Resources, agency, achievements: Reflections on the measurement of women's empowerment. Development and Change, 30(3), 435–464. https://doi.org/10.1111/1467-7660.00125

Maithreyi Krishnaraj (2011), "Women and Water: Issues of Gender, Caste, Class and Institutions," Economic & Political Weekly, 46 (18): 64–72, April 2011, https:// www.indiawaterportal.org/articles/women-and-water-collection-papers-economic-and-political-weekly-volume-xlvi-number-18-0.

National Center for Biotechnology Information (NCBI). (2015). Gender-Responsive Sanitation Solutions in Urban India - RTI Press Research Brief. Retrieved from https://www.ncbi.nlm.nih.gov/books/NBK512957/

National Water Mission (2021), "Women Water Compendium," retrieved from https://nwm.gov.in/sites/default/files/Women%20Water%20Compendium_July%2021.pdf.

Observer Research Foundation (ORF). (2023). Gender in the Waterscape: Creating Economic Ripples in India's Labour Markets. Retrieved from https://www.orfonline.org/research/gender-in-the-waterscape-creating-economic-ripples-in-india-s-labour-markets/

Seema Kulkarni (2011), "Women and Decentralised Water Governance: Issues, Challenges and the Way Forward," Economic & Political Weekly, 46 (18): 64–72.

Varsha Khandker, Vasant P. Gandhi, and Nicky Johnson (2020), "Gender Perspective in Water Management: The Involvement of Women in Participatory Water Institutions of Eastern India," Water 12, no. 1: 196, https://doi.org/10.3390/w12010196.

World Economic Forum (WEF). (2018, July 23). India's water crisis is hitting women hardest. Retrieved from https://www.weforum.org/stories/2018/07/forced-to-walk-miles-india-water-crisis-hits-rural-women-hardest/